RESEARCH REVIEW JOURNALS
RCTRM-2018
OCT- 2018
Special Issue

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

इंदौर गायकी की विलक्षणता

साक्षी शर्मा

रिसर्च स्कॉलर, एम.डी. यूनिवर्सिटी, रोहतक।

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 20 Oct 2018

Keywords
घराना परम्परा संगीत कला

ABSTRACT

संगीत कला सदैव परिवर्तनशील रही है। कुछ परिर्वतन अल्पकालीन होते हैं तथा कुछ का प्रभाव दीर्घकालीन बना रहता है। घराना परम्परा के उद्गम के पीछे चाहे अन्य कई महत्वपूर्ण कारण मौजूद थे परन्तु फिर भी एक अहम् कारण यह स्पष्ट होता है कि समकालीन परम्पराओं में किसी एक विलक्षण सोच के स्वामी कलाकार के निजी चिन्तन द्वारा शैलीगत नौहार में समूल बदलाव दृष्टिगोचर होने प्रारम्भ हो जाते हैं तथा जब ये बदलाव काल –क्रमानुसार अपनी विशेषताओं के कारण बहुत बड़े क्षेत्र में अपना लिए जाते हैं तो वह परम्परा या उसकी शाखा एक नए ढांचे में ढल कर उस व्यक्ति विशेष या स्थान विशेष के नाम पर अपनी पहचान स्थापित कर लेती है। ठीक ऐसा ही उस्ताद अमीर खाँ साहब के संबंध में हुआ। उस्ताद अमीर खाँ साहब ने किराना ख्याल शैली को अपनी गायकी तथा अपनी आवाज़ के गुण धर्म के अनुसार ढाल कर रागों के गूढ़ अध्ययन उपरान्त मेरुखण्ड विधि के समावेश से एक विलक्षण अंदाज की शैली का निर्माण किया जो उनके शार्गिदों तथा तीसरी पीढ़ी द्वारा आत्मसात करने के बाद अब चौथी पीढ़ी के मध्य अभ्यास एवं चिन्तन का विषय बन चुकी है। उस्ताद अमीर खाँ साहब की गायकी विभिन्न घरानेदार गायकों की गायकी का गुलदस्ता थी जिसे उन्होंने अपनी मेहनत, प्रज्ञता, ज्ञान तथा कौशल से संवारा। आज यह गायकी 'इंदौर गायकी' के रुप से विख्यात हो संगीत जगत में एक अहम मुकाम हासिल कर चुकी है।

उद्देश्य–

प्रस्तुत कार्य में इंदौर घराने की गायकी की बारीकियों पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जाएगा। उदाहरण स्वरूप–ख़्याल का स्वरूप, शुद्ध मुद्रा में गायन, सरगम और तान का विलक्षण प्रयोग, मंद्र और मध्य सप्तक पर ज़ोर, षडज का प्रभुत्व, गंभीर व विस्तृत रागों की तरफ रुझान, स्वरों की क्रमवार बढ़त, अति विलंबित गायकी तथा ख़्यालनुमा तराने आदि जैसे पहलुओं को उजागर किया जाएगा।

शोध प्रविधी:

इस शोध पत्र में लेखिका द्वारा साक्षात्कार पद्धति को मूल आधार बनाया जाएगा, साथ ही इन्टरनेट तथ आडियो रिकार्ड्स की भी मदद ली जाएगी ताकि उपरोक्त वर्णित गायकी को भलीभाँति स्पष्ट किया जा सके।

निष्कर्ष:

जिसे 'इंदौर गायकी' के नाम से संबोधित किया जा रहा है, उसे उस्ताद अमीर खां साहब की अपनी विलक्षण शैली कहा जा सकता है, जिसे वे प्रतिभा की कल्पना, बुद्धि की भावना तथा तकनीक के माध्यम से अस्तित्व में लाए। वर्तमान समय में कोई भी ऐसा कलाकार नहीं जो इंदौर गायकी के प्रभाव से दूर रह पाया हो।

संगीत कला सदैव परिवर्तनशील रही है। कुछ परिर्वतन अल्पकालीन होते हैं तथा कुछ का प्रभाव दीर्घकालीन बना रहता है। घराना परम्परा के उद्गम के पीछे चाहे अन्य कई महत्वपूर्ण कारण मौजूद थे परन्तु फिर भी एक अहम् कारण यह स्पष्ट होता है कि समकालीन परम्पराओं में किसी एक विलक्षण सोच के स्वामी कलाकार के निजी चिन्तन द्वारा शैलीगत नौहार में समूल बदलाव दृष्टिगोचर होने प्रारम्भ हो जाते हैं तथा जब ये बदलाव काल –क्रमानुसार अपनी विशेषताओं के कारण बहुत बड़े क्षेत्र में अपना लिए जाते हैं तो वह परम्परा या उसकी शाखा एक नए ढांचे में ढल कर उस व्यक्ति विशेष या स्थान विशेष के नाम पर अपनी पहचान स्थापित कर लेती है। ठीक ऐसा ही उस्ताद अमीर खाँ साहब के संबंध में हुआ। उस्ताद अमीर खाँ साहब ने किराना ख्याल शैली को अपनी गायकी तथा अपनी आवाज़ के गुण धर्म के अनुसार ढाल कर रागों के गूढ़ अध्ययन उपरान्त मेरुखण्ड विधि के समावेश से एक विलक्षण अंदाज की शैली का निर्माण किया जो उनके शार्गिदों तथा तीसरी पीढ़ी द्वारा आत्मसात करने के बाद अब चौथी पीढ़ी के मध्य अभ्यास एवं चिन्तन का विषय बन चुकी है। उस्ताद अमीर खाँ साहब की गायकी विभिन्न घरानेदार गायकों की गायकी का गुलदस्ता थी जिसे उन्होंने अपनी मेहनत, प्रज्ञता, ज्ञान तथा कौशल से संवारा। आज यह गायकी 'इंदौर गायकी के रुप से विख्यात हो संगीत जगत में एक अहम मुकाम हासिल कर चुकी है।

उस्ताद अमीर खाँ साहब के गाने में कारण प्रसिद्ध प्राप्त 'इंदौर घराना' आज सर्वमान्य है तथा समझदार श्रोताओं को रसास्वादन कर रहा है। श्रोतावर्ग में बढ़ती लोकप्रियता तथा अनुयायियों की बढ़ती संख्या के कारण सभी प्रचलित घरानों में 'इंदौर' घराने का स्थान उठता जा रहा है। उस्ताद अमीर खाँ साहब ने अपने गायन की विशेषताओं से इस शैली को परिपक्वता तथा लोकप्रियता प्रदान की। खाँ साहब का गाना श्रोताओं को मोह लेने वाला होता था जो कि उनकी आत्मा से निकलने वाली पुकार ही थी। मेरुखण्ड, षडज की

महत्वत्ता, सरगम का विलक्षण ढंग, गंभीर प्रकृति वाले रागों का गायन, चमत्कारिक तानें, मौन एवं विराम का विशेष स्थान, अतिविलम्बित लय, रुबाईदार तराने आदि इंदौर गायकी के अविभाज्य तत्त्व बने। स्वर्गीय बिंदु चावला के अनुसार '' इंदौर की गायकी न्यास के अनहद संगीत को साक्षात्कार कर, मेरुखण्ड के ब्रह्माण्ड के जादू की भाषा है।[1] खां साहब पूर्ण रुपेण तन्मय होकर गाते तथा उनकी गायकी ही इंदौर घराने की उत्पति का कारण बनी। इंदौर गायकी में उपस्थित विभिन्न तत्त्वों का जो समावेश है उसका क्रमबद्ध विवेचन निम्नलिखित अनुसार हैः–

मेरुखण्डः–

इंदौर घराने की गायकी का प्राण तत्व है– 'मेरुखण्ड' मेरु + खण्ड, दो शब्दों के मेल से बना है। 'खण्ड' का अर्थ है विभाग तथा 'मेरु' शब्द अपने आप में अनेक अर्थों को समेटे हुए है। शब्दकोश के अनुसार 'मेरु' के अनेक अर्थ हैंः झूले के ऊपर वाली वह लकड़ी जिसके साथ झूले की रस्सीयाँ बँधी होती हैं, छन्द शास्त्र की वह प्रक्रिया जिसके द्वारा यह पहचाना जा सके कि लघु–गुरु के कितने छन्द हैं, मेल–मिलाप।[2] मेरुखण्ड को खण्डमेरु, सुमेरखण्ड, मेरखण्ड तथा स्वर प्रस्तार आदि कई नामों से जाना जाता है। इंदौर घराने की बुनाई है– मेरुखण्ड। बारहवीं सदी के विद्वान पंडित शांरगदेव के लिखे शास्त्र 'संगीत रत्नाकर' में मेरुखण्ड का सबसे पहला ज़िक्र मिलता है और इसे स्वरों के 'परम्यूटेशन– काम्बिनेशन' कहकर भी बताया जाता है, जिस से सात सुरों को फेर बदलने से, बिना दोहराये, 5040 तानों का निर्माण होता है..... संगीत का ब्रह्माण्ड। और इस ब्रह्माण्ड को खोलने का तरीका है मेरुखण्ड से राग की सिलसिलेदार बढ़त।[3]

मेरुखण्ड में गणितीय ढंग से स्वरों को दोहराये बिना उनके अनेक समुह बनाए जा सकते हैं उदाहरण के लिए स औ रे से स रे, रे, स दो स्वर समुह तथा स, रे, ग से स रे ग, रे स ग, स ग रे, ग स रे, रे ग स, ग रे स छः स्वर समुह हमारे समक्ष आते हैं। इसी प्रकार सात स्वरों के नियमपूर्वक प्रयोग से 5040 तानों का निर्माण संभव हो पाता है।

मेरुखण्ड से उस्तार अमीर खां साहब राग के नये–नये रास्ते सोचते रहते कि राग में कितना स्कोप है। यह मेरुखण्ड ही है जिसकी वजह से उस्ताद अमीर खां साहब के गाये राग ऐसी–ऐसी जगह खोलते हैं, जिन्हें राग में पहले कभी भी सुना न गया हो। 'सोच का गाना', मेरुखण्ड की वजह से इसे 'सोच' का गाना भी कहा जाने लगा। पं. अमरनाथ जी कहते थे कि 'उस्ताद अमीर खां साहब 2–3 घंटे तानपुरे के साथ रियाज़ कर, फिर दिन भर बैठे–बैठे गाने को सोचते रहते, जिसमें मेरुखण्ड का चिन्तन बहुत हद तक शामिल था।[4]

मेरुखण्ड पद्धति ही उस्ताद अमीर खां साहब की उत्कृष्ट गायकी में एक सहायक तव की तरह उमर कर सामने आई।

षडज की महत्वताः–

इंदौर घराने की गायकी का एक मर्म है– 'षडज' का प्रयोग। डा. यशपाल शर्मा के अनुसार 'मेरे गुरु जी (पंडित अमरनाथजी) अक्सर मुझे कहते कि राग की जैसे भी बढ़त करो, जितना भी विस्तार करो, परन्तु सदैव षडज पर आ कर विलीन होना, इससे हमारे घराने की पहचान बनी रहेगी तथा नए–नए रहस्य खुलते जांएगे।'[5] उस्ताद अमीर खां साहब राग की बढ़त षडज से आरम्भ करते हुए मंद्र से मध्य की ओर जाते तथा मंद्र को भी साथ रखते हुए, षडज के प्रभुत्व से अनेक नए मार्ग खोजने।

इंदौर की गायकी में ध्यान योग का रहस्य है ''स'' का बर्ताव। ''स'' हमारे अन्दर चल रहे नाद का अनहद स्वर है। पंडित अमरनाथ जी कहते 'जब कुछ नहीं था तो सबसे पहले प्रकट होना परम का साक्षात्कार ही है, अनहद नाद का एक निरन्तर चला आ रहा साक्षात्कार जिसका प्रतीक है ''स''।

विराम का अनूठा स्थानः–

गायन के मध्य सूक्ष्म अंतरालों को हम 'विराम' कहते हैं। राग की बढ़त के समय कुछ समय का 'पाज़' उस्ताद अमीर खां साहब की गायकी के भाव को भावुकता से जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण उपकरण था। विराम के शान्तिपूर्ण क्षण एक अद्भुत क्रिया को जन्म देते हैं जिससे एक अद्वितीय कला की सर्जना होती है। जिस प्रकार सागर की एक ऊँची लहर उठती है फिर कुछ क्षण पानी शांत प्रतीत होता हैं और तत्पश्चात् पीछे और लहर आ जाती है। जल की उस शान्ति के क्षणों में, ऐसा नहीं कि कुछ घटित नहीं हो रहा, उसके भीतर फिर लहर बन उमड़ कर आने की ऊर्जा संगठित हो रही है। जिस प्रकार समुद्र की लहरों के प्रवाह में एक निरन्तरता रहती है, उसी प्रकार अमीर खाँ साहब के गायन में एक प्रवाह रहता है।..... हर बार उनकी नवीन स्वरावली संजीवनी शक्ति से सराबोर होकर फिर से उठती है, उदाहरण के लिए खां साहब द्धारा गाया गया राग 'मियां की तोड़ी' में विलम्बित ख्याल की बंदिश 'काजो रे काजो' में गायन का यह पक्ष स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।[7] इस सूक्ष्म परन्तु अति महत्वपूर्ण तत्व ने इंदौर गायकी में चैनदारी के गुण को सार्थक बनाए रखा।

क्लिष्ट सरगमः–

स्वरों को उनके निश्चित स्थान पर उनके नाम से सम्बोधित करके गाना 'सरगम' कहलाता है। उस्ताद अमीर खां साहब ने अपनी गायकी में सरगम को खूब महत्व दिया। उन्होंने अतिविलम्बित से लेकर अति द्रुत तक सरगम के अनेक प्रयोग इस शैली में मिश्रित किए। वे राग के वादी संवादी स्वरों को ध्यान में रखते हुए मेरूखण्ड के प्रयोग से सरगम का रागात्मक व भावात्मक चित्रण करते थे। खां साहब ने स्वरों का खड़ा प्रयोग न करते हुए इसे भावाभिव्यक्ति में सक्षम बनाने हेतु मींड, कण, गमक व खटके का प्रयोग किया। वे स्वयं कहते थे, ''अभी तक तो सरगम बोली जाती थी लेकिन मैं सरगम को गाता हूँ।''[8]

'ख्याल गायकी में सरगम'' विषय पर डॉ. प्रभा अत्रे ने अपनी पुस्तक में सरगम में मींड के प्रयोग की तीन संभावनाएं बताई हैंः–

1. दो स्वरों को मींड से जोड़ते समय प्रथम के स्थान पर ही दूसरे स्वर नाम को उच्चारित करने के पश्चात् दूसरे स्वर के स्थान पर पहुंचना। उदाहरणार्थ–

स्वर स्थान – ग नी

स्वर नाम– ग । नी (ई) →

2. पहले स्वर नाम को ही दीर्घ करते हुए, दूसरे स्वर के स्थान तक पहुंचना,तत्पश्चात् दूसरे स्वर नाम का उच्चारण करना।

स्वर स्थान – ग नी

स्वर नाम– ग (अ) → नी

3. दोनों स्वर स्थानों के बीच में स्वर नाम परिवर्तित करना।

स्वर स्थान –ग नी

स्वर नाम– ग (अ) → नी (ई) → ।[9]

उपरोक्त वर्णित द्वितीय प्रकार को छोड़कर मींड की शेष सभी संभावनाओं का प्रयोग खां साहब द्वारा किया गया। अधिकांश कलाकारों ने आलाप और तान के मध्य बोलबांट का प्रयोग किया परन्तु खां साहब ने सरगम को ही महत्व दिया। वे सरगम को कुछ इस तरह गाते कि मूल स्वर का नाम मात्र उच्चारण कर, आस–पास के स्वर कण स्वर की तरह प्रगट कर देते। खां साहब ने सरगम के विविध प्रयोगों को इंदौर गायकी का हिस्सा बनाया।

तानों की जटिलताः–

इंदौर गायकी की तानों की सबसे मुख्य विशेषता यह है कि कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि एक टुकड़े के बाद कौन सा टुकड़ा आएगा और कैसा स्वरूप लिए आएगा। तानों के संदर्भ में यह शैली क्रमिक बढ़त की औपचारिकता को स्वीकार नहीं करती। तानों के लिए सरगम, आकार तथा बोल तान तीनों रूप प्रयोग किए जाते हैं। उस्ताद अमीर खां साहब की तानों का स्मरण करते हुए डॉ. प्रभा अत्रे ने लिशा ''राग प्रस्तुतिकरण में आलाप की गति से प्रवेश पाने वाली सरगम, तान की गति तक पहुंचती और तब तान शुरू होती । ये तानें स्वच्छ, सुंदर, दानेदार, तीनों सप्तकों में संचरण करने वाली; लय के विविध आकार देते हुए, अनपेक्षित आकृतियाँ निर्मित करते। अगर श्रोता ध्यान न दे, तो उनकी दृष्टि इन आकृतियों से चूक जायेगी।''[10] इस शैली में तानों में कोई एक योजना न देखते हुए समस्त रूप जैसे सपाट, अलंकारिक, छूट, वक्र, फिरत आदि मिश्रित रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। तानों की समाप्ति अवरोही क्रम में छूट की तान के रूप में भी देखने को मिलती है। इस घराने में जबड़े व हलक की तान का प्रयोग नहीं किया जाता। मेरूखण्ड के प्रयोग से ऐसी–ऐसी घुमावदार तथा क्लिष्ट तानों का गायन किया जाता है परन्तु फिर भी शान्ति तथा गांभीर्य का बोध विद्यमान रहता है।

गंभीर प्रकृति वाले रागों का चयनः–

उस्ताद अमीर खां साहब के स्वभाव में एक संजीदापन था जो उनके द्वारा गाये रागों में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। खां साहब द्वारा गाये गए रागों में राग दरबारी,मारवा, पूरिया, यमन, ललित, तोड़ी, बैरागी, बिहाग, पूरिया कल्याण, आभोगी, मुलतानी, मेघ, मधुकौंस, बागेश्री, मालकौंस, हंसध्वनि, भीमपलासी, चारुकेशी, भटियार, भैरव, शुद्ध, कल्याण, जोग, नट भैरव, केदार, कलावती, बहार, श्री, मियां कल्हार, सूहा आदि राग ध्यान में आते हैं। आप ने ऐसे रागों को तरज़ीह दी जिसमें अपार विस्तार की संभावना है। राग दरबारी तो खां साहब को अति प्रिय था, अनेक साक्षात्कारों में खां साहब ने राग दरबारी को अपना सबसे पसंदीदा राग कहा। आपने दक्षिणी रागों जैसे जनसम्मोहिनी, हंसध्वनि, आभोगी आदि को भी भारतीय संगीत में महत्वपूर्ण स्थान दिलवाया। मारवा और श्री जैसे रागों को भी खां साहब ने बहुत लोकप्रिय किया। पं. रविशंकर ने जब विदेशों में भारतीय संगीत का उदाहरण प्रस्तुत किया तो अमीर खां साहब का राग मारवा का ही रिकॉर्ड बजाया। लोक अमीर खां और मारवा को एक दूसरे का पर्याय कहने लगे थे।[11]

इस प्रकार इंदौर घराने में इस शैली की चैनदारी तथा भावपूर्णता को बरकरार रखते हुए गंभीर रागों का चयन किया गया।

अति विलंबित लय का प्रयोगः–

इस बात में कोई संदेह नहीं कि खां साहब से पहले भी अति विलंबित लय में गायन किया जाता था परन्तु इस गायकी को संगीत जगत में प्रतिष्ठा दिलवाने का श्रेय खां साहब को ही जाता हैं खां साहब ने ऐसे दौर में अति विलंबित लय का प्रचलन बढ़ाया जब चारों ओर मध्य लय का ही बोलबाला था। बहुत से लोगों ने खां साहब की इस विशेषता की आलोचना भी की, तब खां साहब ने एक साक्षात्कार में उत्तर दिया ''अपना–अपना मिज़ाज होता है। किसी का द्रुत की ओर झुकाव होता है तो किसी का विलंबित की ओर। वैसे देखा गया है कि जो अति विलंबित नहीं संवार पाते वही उसे बुरा कहते हैं। उनके लिए अंगूर खट्टे हैं।''[12] खां साहब ने झूमरा ताल का प्रयोग सर्वाधिक मात्रा में किया, यह ताल उनके अत्यन्त गंभीर स्वभाव के लिए सर्वथा उपयुक्त भी थी। एक ताल की 12 मात्राएं होने के कारण झूमरा (जिसकी 14 मात्राएं हैं) में अधिक विस्तार संभव था। खां साहब ने झूमरा को भी अति विलंबित रूप में प्रयोग किया जिससे आवर्तन का समय भी बढ़ गया तथा सोच की गुंजाईश भी। पंडित अमरनाथ जी के एक व्याख्यान के अनुसार ''आज जो विलंबित गाई जाती है, जिसको अति विलंबित कहने लगे हैं, वह कुछ और नहीं–हमने ठेका चार गुना नीचे उतार दिया है, ख्याल की लय तो वही है। जो ख्याल हम चार चक्करों में गाते थे, वही अब एक चक्कर में गाते हैं।'' यही 1/4 आज केवल इंदौर घराने तक सीमित न रहते हुए, सभी घरानेदार कलाकारों द्वारा अपनाया गया।

ख़्यालनुमा तरानेः–

उस्ताद अमीर खां साहब ने तराने का ख्यालनुमा प्रयोग किया। खां साहब ने विलंबित ख्याल के बाद द्रुत ख्याल तथा द्रुत ख्याल के बाद तराना गायन शैली का प्रचलन बढ़ाया। 29 जून, 1974 को आकाशवाणी के अखिल भारतीय कार्यक्रम में आचार्य बृहस्पति ने कहा ''खां साहब ख्याल अँग का तराना गाया करते थे।''[13]

तराने का आविष्कार अमीर खुसरो ने किया, जिसका ज़िक्र खां साहब अक्सर ही किया करते थे। खां साहब ने लम्बे अर्से तक तराना शैली पर शोध किया। उन्होंने तराने के बोलों को अर्थहीन न मानते हुए उन्हें 'फारसी' और 'अरबी' भाषा के शब्द बताया। उनके अनुसार यह शैली ईश्वर के स्मरण का एक रास्ता था। प्रो. चंद्रकांतलाल दास के मतानुसार ''उस्ताद अमीर खां ने तराना में शोध कर जो निष्कर्ष प्रस्तुत किया है, वह तर्क सम्मत और विश्वसनीय है।''[14] खां साहब ने राग मेघ, हंसध्वनि, चंद्रकौंस, दरबारी, मालकौंस, सूहा, पूरिया कल्याण इत्यादि में कई रूबाईदार तराने गाए। रूबाईदार तराने का

अर्थ स्पष्ट करते हुए पंडित अमरनाथ ने कहा ''रूबाई का अर्थ है दो अथवा चार पंक्तियों की कविता में विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति और जिन तरानों में रूबाई गाई जाती है, वे रूबाईदार तराने कहलाते हैं।''[15] खां साहब के प्रयासों हेतु तराना गायकी की एक पृथक शैली अस्तित्व में आई। खां साहब को राग दरबारी में स्वयं रचित तराना 'या रे मन बिया बिया' अत्यन्त प्रिय था।

अन्त में कहा जा सकता है कि इंदौर घरान ख्याल परम्परा की नवीनतम कड़ी है, जो उस्ताद अमीर खां साहब की निजी सोच तथा चिन्तन हेतु अपनी विलक्षण पहचान बनाने में सफल रहा। आज इस शैली के प्रशंसको की गिनती में लगातार बढ़ौतरी हो रही है। न केवल भारत बल्कि विदेश में भी इस परम्परा का प्रसार हो रहा है। आज शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में कोई ऐसा गायक, वादक नहीं जो इंदौर शैली के प्रभाव से बच पाया हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) इंदौर के मसीहा पंडित अमरनाथ जी द्वारा उस्ताद अमीर खाँ साहब के संस्मरण, बिंदु चावला, पृ. 165
2) मेरू, हिन्दी शब्दकोष, डा. हरदेव बाहरी।
3) इंदौर के मसीहा : पंडित अमरनाथजी द्वारा उस्ताद अमीर खाँ साहब के संस्मरण, बिंदु चावला, पृ. 161
4) वही, पृ. 163
5) साक्षात्कार, डॉ. यशपाल शर्मा, पटियाला, 12 मई 2018
6) इंदौर के मसीहा, बिंदु चावला, पृ. 149
7) संगीत के देदीप्यमान सूर्यः उस्ताद अमीर खां,पं. तेजपाल सिंह, डॉ. प्रेरण अरोड़ा, पृ. 64
8) वही, पृ. 52
9) भारतीय संगीतकार उस्ताद अमीर खां, डॉ. इब्राहीम अली, पृ. 158
10) स्वरमयी, लेख–'अमीर खां साहब' डॉ. प्रभा अत्रे, पृ. 30
11) संगीत के देदीप्यमान सूर्य, पं. तेजपाल सिंह, डॉ. प्रेरणा अरोड़ा, पृ. 63
12) संगीत–जनवरी/फरवरी, 1980 पृ. 19 ''मेरी गायकी, मेरी आवाज'', ले. रविन्द्र बिष्ट
13) भारतीय संगीतकार उस्ताद अमीर खां, डॉ. इब्राहीम अली, पृ. 143
14) संगीत–मइ, 1973 ''उस्ताद अमीर खां और उनकी कला'' ले. प्रो. चंद्रकांतलाल दास।
15) Living Idioms in Hindustani Music, Pt. Amarnath, Page No. 95